6919(B)

मातृभूमि के सम्मान-रक्षक

क्रान्तिवीर भगतसिंह

पुस्तकालय
युग निर्माण योजना
मथुरा
परिग्रहण सं० .....
वर्गांक .....

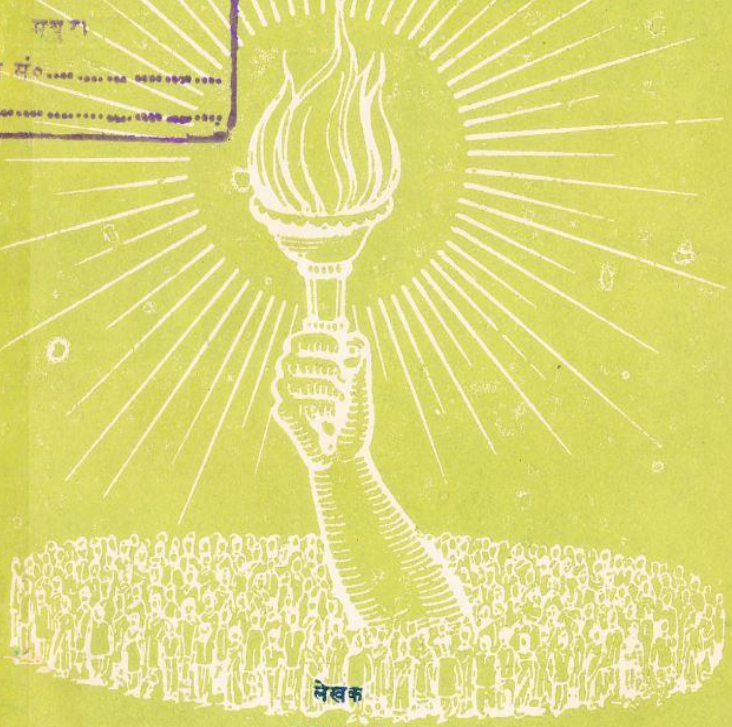

लेखक
सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक 'चाँद' 'सतयुग' 'प्रणवीर'

युग-निर्माण-योजना, मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

YUG NIRMAN YOJANA, GAYATRI TAPOBHUMI
MATHURA, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

मातृ-भूमि की सम्मान रक्षा करने वाला

क्रान्तिवीर भगतसिंह



सन् १९२८ (उन्नीस सौ अट्ठाईस) का अक्टूबर का महीना था, जब लाहौर नगर के जन-जीवन में एक घोर हलचल व्याप्त हो रही थी। जिधर देखो लोगों की छोटी-बड़ी टोलियां अँगरेजी शासन के विरुद्ध चर्चा करती और बदनाम सायमन कमीशन के बायकाट के सम्बन्ध में रोष का भाव प्रकट करती नजर आती थीं। यह सायमन-कमीशन क्या था, भारतवासियों के स्वतन्त्रता-संग्राम को कुचलने के लिये ब्रिटिश गवर्नमेंट का एक बड़ा कुचक्र था। इस समय महात्मा गान्धी के असहयोग तथा सत्याग्रह आन्दोलन ने एक ऐसी देश-व्यापी जागृति उत्पन्न कर दी थी कि भारत की असंख्य जनता अँगरेजी सरकार की शोषण नीति और दमन द्वारा शासन के विरुद्ध कटिबद्ध हो गई थी। देश में स्थान-स्थान पर अशान्ति उत्पन्न होती रहती थी, जिसमें अनेक व्यक्ति हता-हत होते और हजारों जेलों में बन्द किये जाते थे। इससे देश-विदेशों में सरकार की बदनामी फैल रही थी और जो भारतवासी सरकार के सहायक और समर्थक थे, वे भी एक-एक करके उसको दोषी बतलाकर विरोधी पक्ष से सहानुभूति रखने वाले बनते जाते थे। सायमन कमीशन इसी उद्देश्य से यहाँ भेजा गया था कि वह अँगरेजों के अत्याचारी शासन और दमन नीति पर लीपापोती करके भारतवासियों को दोषी और स्वराज्य के अयोग्य सिद्ध करे।

यह कमीशन फरवरी के महीने में ही देशमें पदार्पण कर चुका था और बम्बई, कलकत्ता, दिल्ली, मद्रास आदि जहाँ भी गया था लाखों की भीड़ ने काले झण्डों से उसका 'स्वागत' करके 'सायमन गो बैक' के नारे लगाये थे। इससे कमीशन के सदस्य बहुत भड़कते थे और भारतीय अधिकारी यह प्रयत्न

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते थे कि जहां तक सम्भव हो कमीशन के आगमन से पूर्व ही प्रदर्शनकारियों की भीड़ को तितर-बितर कर दिया जाय, जिससे सायमन साहब को यह अप्रिय दृश्य न देखने पड़ें। लाहौर के पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० स्काट इस सम्बन्ध में विशेष व्यग्र थे। पजाब को "फौजी सूबा" माना जाता था और वहाँ की पुलिस जनता को दबाने में पशुबल का प्रयोग अधिक करती रहती थी। इस अवसर पर भी लाहौर स्टेशन के सामने जमा लोगों की भीड़ को हटाने के लिये वहाँ की पुलिस ने लोगों पर खूब डण्डे चलाये। इस पर भी जब मुख्य आन्दोलनकारियों का एक दल, जिसमें भगतसिंह और उसके सहकारी सम्मिलित थे और जिसका नेतृत्व लाला लाजपतराय कर रहे थे, अपने स्थान पर ही डटा रहा तो पुलिस का असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेण्ट साण्डर्स बड़े तैश में आकर उस पर अन्धाधुन्ध लाठी चलाने लगा। कई लाठियाँ लालाजी को भी लगीं, जिनसे काफी चोट आ गई। इससे समस्त नगर में बड़ा रोष फैल गया। शाम को जो सार्वजनिक सभा हुई उसमें लाला लाजपतराय ने गर्जते हुए कहा— "मैं घोषणा करता हूँ कि मुझ पर जो चोटें पड़ीं हैं वे अँगरेजी शासन के 'काफिन' (अर्थी) के लिये अन्तिम कीलें सिद्ध होंगी।" इसके बीस पच्चीस दिन बाद ही (१७ नवम्बर १९२८ को) लालाजी का देहान्त हो गया।

इस घटना से देश भर में क्षोभ और रोष की एक लहर दौड़ गई। क्रान्तिकारी दल ने इसका बदला लेने का निश्चय किया। इस समय तक काकोरी के कैदियों को छुड़ाने, बायसराय की मोटर और सायमन कमीशन पर बम फेंकने की योजनायें असफल हो जाने से क्रान्तिकारियों के हौसले मन्द हो रहे थे। भगतसिंह ने इस अवसर को दल की प्रतिष्ठा को ऊँचा उठाने और जनता का भी ध्यान उसकी तरफ आकर्षित करने के लिये बहुत उपयुक्त समझा। बस तैयारियाँ शुरू हो गईं। उद्देश्य तो था पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट स्काट को गोली का निशाना बनाना, पर वह ठीक अवसर पर अन्यत्र चला गया जिससे उसकी जगह साण्डर्स मारा गया, इसी साण्डर्स ने स्काट की सलाह से लालाजी पर लाठी चलाई थी। कुछ भी हो इस कार्य से भगतसिंह और उनके दल का नाम जनता में चमक उठा और सभी स्वतन्त्रता प्रिय व्यक्ति इस बात

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पर गर्व अनुभव करने लगे कि नवयुवकों ने राष्ट्रीय अपमान का बदला ले लिया।

क्राँतिपथ का पथिक —

भगतसिंह (जन्म २८ सितम्बर १९०७) आरम्भ से ही देशभक्ति और क्रांति के वातावरण में पला था। उसके चाचा अजीतसिंह का नाम सन् १९०७ में, जब उनको लाला लाजपतराय के साथ माण्डले (बर्मा) में देश निकाला दिया गया, देश के कोने-कोने में छा गया था। उसके पिता सरदार किशनसिंह आजन्म गर्मदल के आन्दोलनकारी रहे और अनेक बार जेल भेजे गये। छोटे चाचा स्वर्णसिंह भी उसी मार्ग पर चले और जेल में दुर्व्यवहार सह कर सन् १९१० में ही दुनियाँ से चल दिये। ऐसे वातावरण में जन्म लेने वाला और शैशवावस्था से उन्हीं बातों की चर्चा सुनने वाला भगतसिंह अगर देश का प्रमुख क्रांतिकारी बन गया तो क्या आश्चर्य है।

भगतसिंह की शिक्षा भी इसी आदर्श के अनुकूल हुई थी। आरम्भ में ही उनको डी० ए० वी० स्कूल में दाखिल कराया गया जिसमें राष्ट्रीयता की भावना उत्पन्न कराई जाती थी। वह नौवीं क्लास में ही पहुंचे थे कि देश में असहयोग का शङ्ख बज गया। हजारों लाखों विद्यार्थी सरकारी और सरकार से सहयोग प्राप्त (एडेड) स्कूलों को छोड़कर आन्दोलन में भाग लेने लगे। ऐसे समय में भगतसिंह कैसे पीछे रहते। वे स्कूल से निकलकर मैदान में आ गये और जलूस निकालकर विदेशी वस्त्रों की होली जलाने लगे। जलियांवाला बाग के हत्याकाण्ड का समाचार सुन कर वे दूसरे ही दिन वहाँ पहुंच गये और अँगरेज सिपाहियों का भय न करके शहीदों के खून से सनी मिट्टी शीशी में भरकर ले आये।

कुछ समय पश्चात उनका नाम लाहौर के नेशनल कालेज में लिखाया गया। इसकी स्थापना लाला लाजपतराय और उनके साथी कुछ प्रमुख नेताओं ने की थी और वहाँ पर आचार्य जुगलकिशोर, भाई परमानन्द, श्री जयचन्द्र विद्यालंकर जैसे क्रांतिकारी और देशभक्त शिक्षक कार्य कर रहे थे। इस प्रकार यह नेशनल कालेज क्रांतिकारी युवकों को ढालने की एक मशीन ही थी। इन

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देशभक्तों के सम्पर्क में आकर और कालिज की लायब्रेरी से क्रांति और विद्रोह का साहित्य पढ़कर भगतसिंह एक भारतीय क्रांतिवादी के आदर्शानुसार बहुत कुछ दृढ़ हो गया।

विवाह न करने के लिये गृह त्याग —

अब जीवन में एक नया मोड़ आया। सन् १९२३ में भगतसिंह ने एफ० ए० पास कर लिया और बी० ए० के पढ़ाई की तैयारी करने लगे। उसी समय घर में उनके विवाह की चर्चा उठी। पर जिसके मन में मातृभूमि के उद्धार के लिए प्राणों की बाजी लगाने की लौ लगी हो वह सोलह वर्ष की आयु में विवाह के खिलवाड़ को कैसे पसन्द कर सकता था। क्रांतिकारी दल के संचालक शचीन्द्र नाथ सान्याल उन दिनों वहीं थे। उन्होंने भगतसिंह से कहा कि "यदि तुम शादी कर लोगे तो भविष्य में क्रान्तिकारी आन्दोलन में अधिक भाग नहीं ले सकोगे।.....क्या तुम परिवार छोड़ने को तैयार हो? मेरी इच्छा है कि घर छोड़कर मैं जहाँ कहूँ वहाँ रहने लग जाओ।"

(बन्दी जीवन, पृष्ठ २७७)

इस पर भगतसिंह चुपचाप घर छोड़कर चल दिये। लाहौर से वे सीधे कानपुर पहुँचे और प्रसिद्ध क्रान्तिकारी जोगेशचन्द्र चटर्जी के साथ काम करने लगे। कानपुर के मुख्य स्थानीय संचालक श्री सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य, तथा उनके सहकारी विजयकुमार सिन्हा, वटुकेश्वर दत्त आदि सभी बङ्गाली थे। उनके साथ एक सिख युवक का रहना खुफिया पुलिस वालों की दृष्टि में सन्देहजनक हो सकता था, इसलिए श्री भट्टाचार्य ने, जो स्वयं पत्रकार का कार्य करते थे, क्रान्तिकारियों के सहायक श्री गणेश शंकर जी विद्यार्थी से कहकर "प्रताप" कार्यालय में काम करने की व्यवस्था करा दी। पर वहाँ उनका नाम भगतसिंह की जगह "बलवन्त सिंह" प्रसिद्ध हुआ।

इस तरह भगतसिंह कई महीने तक कानपुर में रहकर काम करते रहे, पर किसी को पता न लगा। मैं (सत्यभक्त) भी उन दिनों कानपुर मजदूर आन्दोलन में भाग ले रहा था और सुरेश बाबू से मेरी घनिष्ठ मित्रता थी, इसलिये उनके यहाँ भगतसिंह से कईबार बातें भी हुईं पर असली नाम का पता

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमको भी न लगा। कुछ समय बाद घर में दादी अधिक बीमार पड़ी, जिससे उनके पिता व्यस्त होकर खोज करने लगे। भगतसिंह के मित्रों से कानपुर का पता पाकर सरदार किशनसिंह ने मौलाना हसरत मोहानी को इस सम्बन्ध में पत्र लिखा। उन्होंने विद्यार्थीजी से कहा और तब बहुत समझाने पर भगतसिंह घर वापस गये।

नौजवान भारत सभा

पर घर पर भी भगतसिंह चुपचाप बैठने वाले न थे। इसलिए "नौजवान भारत-सभा" की स्थापना कर डाली। इसका मुख्य उद्देश्य तो भारतीय युवकों में देशभक्ति की भावना उत्पन्न करना था, पर भीतरी मंशा यह भी था कि इसके सदस्यों में से जो योग्य और कर्मठ प्रतीत हों उनको प्रेरणा देकर क्रांतिकारी दल का सदस्य बनाया जा सके। इसी बीच में अकाली आन्दोलन भी छिड़ गया और उनके सत्याग्रही जत्थे जैतों (नाभा) जाने लगे। सरकार ने गाँवों के प्रमुख लोगों को आदेश दिया कि रास्ते के गाँवों में जत्थों को खाने-पीने की सामग्री बिल्कुल न दी जाय। सरकारी पिट्ठू ऐसी ही कोशिश कर रहे थे। पर जब एक जत्था भगतसिंह के गाँव 'बंगा' के पास होकर गुजरा तो उसने अपने प्रचार और संगठन के बल पर सत्याग्रहियों के पास इतनी भोजन-सामग्री भिजवाई कि वह तीन दिन तक वहाँ टिके रहे। इससे विरोधी जल-भुन गये और उन्होंने झूँठे-सच्चे दोषारोपण करके गिरफ्तारी का वारन्ट निकलवा दिया। ऐसे घर के विभीषणों से उलझना व्यर्थ समझकर वे दिल्ली जाकर "दैनिक अर्जुन" में काम करने लगे। फिर सूचना मिलने पर कानपुर पहुँचे, जहाँ दल का खर्च चलाने के लिए उन्होंने एकाध राजनैतिक डकैती में भी भाग लिया। पर यह कार्य उनकी पसन्द न आया और फिर वे यथासंभव इससे पृथक ही रहे।

इसी बीच अगस्त १९२५ में "काकोरी" की घटना हो गई और दल के अधिकाँश प्रमुख कार्यकर्त्ता पकड़े गए। पर इससे निराश न होकर भगतसिंह और चन्द्रशेखर आदि दल के बचे हुये सदस्य पुनर्गठन करने में लग गये। इस समय पार्टी का मुख्य कार्यालय आगरा में रखा गया। वहीं पर आस-पास

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

के क्राँतिकारी समय-समय पर आया करते थे और उनको बम पिस्तौल आदि का चलाना सिखाया जाता था। बीच-बीच में चन्द्रशेखर और भगतसिंह इधर-उधर जाकर दल का प्रचार किया करते थे। इसी सिलसिले में २५जुलाई १९२७ को भगतसिंह अमृतसर पहुँचे। एक पुलिस वाले ने सन्देह करके पीछा किया तो वे भागकर एक वकील के घर में जा छिपे और अपनी पिस्तौल उसके यहाँ रख दी। पर लाहौर पहुँचते ही उनको गिरफ्तार कर लिया गया। अभियोग यह लगाया गया कि लाहौर में दशहरे के जलूस पर जो बम फेंका गया था, उसमें ये भी शामिल थे। यह एक झूँठा बहाना था, वास्तव में पुलिस उनसे क्रांतिकारी दल का भेद मालूम करना चाहती थी। उनको लाहौर के किले में १५ दिन बन्द रख कर हर तरह से दबाया, धमकाया और शारीरिक यंत्रणायें भी दीं, पर वे कोई कच्चे खिलाड़ी नहीं थे। पुलिस के नामी अफसरों ने हर तरह से कोशिश की पर कोई नतीजा न निकला। उधर उनके पिता सरकार की इस अन्धेरगिर्दी के खिलाफ कानूनी कार्यवाही कर रहे थे। अन्त में उनको मैजिस्ट्रेट के सामने पेश करना ही पड़ा। अभियोग साफ झूँठ होने से हाईकोर्ट ने उनको बरी कर दिया। पर पुलिस ने उनके खिलाफ ऐसे-ऐसे संगीन अभियोग लगाये थे कि छोड़ने की आज्ञा देते हुए चालीस हजार की जमानत माँगली गई जो उस समय एक बहुत बड़ी रकम थी।

डेरी की आड़ में क्राँति की साधना

भगतसिंह की देशभक्ति से प्रभावित होकर दो प्रमुख नागरिकों ने जमानतें दे दीं तो वे भी उतरदायित्व के बन्धन में बँध गये। अब वे कोई क्राँति सम्बन्धी कार्य अपनी इच्छानुसार नहीं कर सकते थे। उनका समय ठीक तरह से निकलता रहे इसके लिए सरदार किशनसिंह ने एक डेरी खुलवादी। भगतसिंह डेरी का बहुत-सा काम अपने हाथों से करते और सब ग्राहकों को सन्तुष्ट रखते। पर इसका अर्थ यह नहीं कि उन्होंने अपना मूल उद्देश्य–क्रांति का प्रचार छोड़ दिया था। दिन में तो वहाँ दूध के व्यापार का काम धूमधाम से किया जाता और रात को अनेक क्रांतिकारी इकट्ठे होकर आगामी कार्य-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रम की योजनाएँ बनाते । भगतसिंह साथियों को दूध भी पिलाते और हर तरह की चर्चा भी होती रहती ।

इधर समाचार पत्रों और सार्वजनिक क्षेत्र में यह आवाज उठाई जा रही थी कि अगर भगतसिंह का कोई कसूर हो तो उह पर मुकदमा चलाओ । अन्यथा जमानत का हुक्म रद्द करो । पंजाब की व्यवस्थापिका सभा में भी श्री बोधराज और डा. गोपीचन्द ने यह प्रश्न पूछा कि सरकार इस मामले में कोई उचित निर्णय क्यों नहीं करती ? वह लोगों में यह गलतफहमी क्यों फैलाने देती है कि उसकी पुलिस जानबूझ कर किसी निर्दोष व्यक्ति को तङ्ग कर रही है । इसके फलस्वरूप भगतसिंह को सर्वथा मुक्त कर दिया गया और तब वह डेरी का धंधा छोड़कर फिर क्रांतिदल के संगठन में दत्तचित्त हो गये । संसार के सब लोग खाने-कमाने को ही जीवन का लक्ष्य समझते हैं,बड़े धार्मिक और आध्यात्मिक कहलाने वाले परमार्थ की बातें करने पर भी स्वार्थ को त्याग सकने में असमर्थ रहते हैं । पर एक भगतसिंह था जिसने एक अच्छे लाभदायक धन्धे को तिनके की तरह त्याग दिया । उसकी मनोवृत्ति देखकर जानकार लोगों को यही लगता था कि इसका जन्म क्रान्ति की साधना के लिए ही हुआ है । जैसे कोई योगी संसार की तरफ से आँखें बन्द करके पारलौकिक लक्ष्य पर ही निगाह रखता है, वैसे ही भगतसिंह के लिय क्रान्ति ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य प्रतीत होती थी ।

डेरी का कार्य करते हुये भी भगतसिंह को जब अवसर मिलता था । क्रान्ति आन्दोलन के प्रचार और प्रसार के लिए कुछ लिखते रहते थे । अनेक व्यक्तियों की तरह वे केवल बम फेंकने अथवा पिस्तौल चलाने वाले क्रांति-कारी ही नहीं थे, वरन् उन्होंने विद्यार्थी अवस्था से इस प्रकार के साहित्य का गहरा अध्ययन किया था और अनेक विदेशी लेखकों की रचनाओं को पढ़ कर क्रमशः अपने ज्ञान को इतना बढ़ा लिया था कि दल में वे अपने साथियों में क्रान्तिकारी सिद्धान्त के मुख्य ज्ञाता माने जाते थे । उन्होंने बहुत परिश्रम करके भारतीय क्रांतिकारियों के चरित्र और चित्र संग्रह किये थे । इन्हीं के आधार पर इलाहबाद के "चाँद" फाँसी अङ्क (नवम्बर १९२८) में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"विप्लव यज्ञ की आहुतियाँ" शीर्षक स्तम्भ तैयार किया गया था। इस बात का ठीक पता मुझे सन् १९२९ में "चाँद" कार्यालय में ही लगा, जब मैं उसके सम्पादकीय विभाग में काम करने लगा और अठारह साल तक उससे मेरा घनिष्ठ सम्बन्ध बना रहा। अन्यथा यह कार्य गुप्त रीति से किया गया था और "चाँद" के संचालक इसका जिक्र करते हुए भी लेखकों के नामों को प्रकट नहीं करते थे।

क्रान्तिकारी दल का पुनर्गठन

अब भगतसिंह की दृष्टि में वह समय आ गया था कि अपने दल का पुनर्सङ्गठन और नवीनीकरण किया जाय और पुराने ढङ्ग की आतंकवादी कार्यवाहियों के बजाय किसी उद्देश्य को सामने रखकर ऐसे काम किये जायें जिनसे एक तरफ अँगरेजी सरकार भयभीत हो और दूसरी तरफ जनता में जागृति उत्पन्न हो। इसके लिये भगतसिंह ने समस्त प्रान्तों के कार्यकर्ताओं को दिल्ली में बुलाया और सितम्बर १९२८ की ८ और ९ तारीखों को फीरोज-शाह के पुराने किले में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक की गई। इसमें पंजाब, उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। चन्द्रशेखर आजाद परिस्थितिवश इसमें सम्मिलित न हो सके, पर उन्होंने कहला भेजा कि जो कुछ निर्णय किया जायगा वह मुझे मान्य होगा। इस कारण मुख्य रूप से भगतसिंह ही इसके संचालक रहे।

इस गुप्त-सभा में दो-तीन बहुत महत्वपूर्ण निर्णय किये गये। सबसे बड़ी बात यह थी कि क्राँतिकारी दल जो अब तक "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोशियेशन" (हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ) कहलाता था, उसका नाम आगे के लिये "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रीपब्लिकन एसोशियेशन" (हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ) कर दिया गया। पहला नाम शचीन्द्रनाथ सान्याल का रखा हुआ था और इसलिये कितने ही सदस्यों ने प्राचीन नेता पर विशेष श्रद्धा रखने के कारण इस परिवर्तन का विरोध किया। पर भगतसिंह दल का आधार किसी ऐसे ठोस सिद्धान्त पर रखना चाहते थे, जिससे उसकी नीति तथा सिद्धान्तों की युक्तियुक्तता सिद्ध हो और कार्यकर्ता तथा जनता यह समझ

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

सकें कि वास्तव में दल किस आदर्श के लिए काम कर रहा है। यद्यपि साम्यवाद (कम्युनिज्म) के सिद्धान्त को शचीन्द्र सान्याल ने सन् १६२३ में ही ग्रहण कर लिया था और अपने दल के विधान में उसकी अधिक से अधिक बातों को शामिल भी किया था, तो भी वे भारत के प्राचीन धर्म और संस्कृति से विशेष प्रभावित थे। इसलिए इस दिशा में धीरे-धीरे ही कदम उठाना चाहते थे। भगतसिंह समय के अनुसार उनसे एक कदम आगे बढ़ा और उसने रूस के आदर्श से प्रेरणा लेकर "समाजवाद" पर चलने की स्पष्ट रूप से घोषणा कर दी।

यह एक ऐसा विषय है जिस पर मैं (सत्यभक्त) भी कुछ प्रकाश डाल सकता हूँ। यद्यपि भगतसिंह ने लाहौर के नेशनल कालेज में पढ़ते हुए सन् १६२१–२२ में ही क्रान्ति और समाजवाद की बहुत-सी पुस्तकों को पढ़ कर उस मत को स्वीकार कर लिया था, पर उस पन्द्रह-सोलह वर्ष की अवस्था में उसके गूढ़-तत्त्व को अच्छी तरह नहीं समझा जा सकता था। उन्हीं दिनों उत्तर-प्रदेश में क्रान्तिकारी दल के सर्वोच्च नेता शचीन्द्र सान्याल भी कम्यूनिज्म की खोज कर रहे थे, क्योंकि रूसी क्रान्ति की सफलता से समस्त भारत के उग्रपंथी विचारधारा के व्यक्तियों का ध्यान उसकी तरफ था। उन्होंने इस सम्बन्ध में कुछ पुस्तकें पढ़ीं और समाचार पत्रों में प्रकाशित लेखों से भी ताजा जानकारी प्राप्त करते रहे, पर उससे उन्हें सन्तोष नहीं हुआ। उस समय अधिकांश लोग रूस के कम्यूनिष्ट शासन को एक चौंकाने वाली घटना की तरह देख रहे थे, पर उसके स्वरूपों तथा सिद्धान्तों की स्पष्ट जानकारी उनको बिल्कुल न थी।

शचीन्द्र बाबू को इस सम्बन्ध में पहली जानकारी सन् १६२२ में दिल्ली कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर हुई। वहाँ उनकी भेंट कलकत्ते के श्री कुतुबुद्दीन अहमद से हुई जो रूस के साम्यवादी दल के सम्पर्क में आ चुके थे। पर धार्मिक और नैतिक विषयों में इन दोनों में पूरा मतभेद बना रहा। इसके पश्चात् उन्होंने कानपुर में आकर इस विषय की खोज की। मैं भी उन दिनों मजदूर आन्दोलन में कुछ काम करने के उद्देश्य से कानपुर में

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

आकर बस गया था और इंलैण्ड, अमरीका आदि के पुस्तक बिक्रेताओं से पत्र व्यवहार करके कम्यूनिज्म की अनेक पुस्तकें मँगाने लगा था। शचीन्द्रबाबू से मेरा परिचय इलाहबाद में हो चुका था और कानपुर में उनके दल के मुख्य कार्यकर्त्ता सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य से मेरी घनिष्ठ मित्रता भी थी, इसलिए उनको मेरे मकान में ही ठहरा दिया गया। बस वे मेरे साथ कम्यूनिज्म की चर्चा करने लगे और पुस्तकों के अध्ययन में भी जुट गये। इसका परिणाम क्या हुआ यह उन्हीं के शब्दों में सुनिये—

"इस प्रकार सन् १६२४ में ही कम्यूनिज्म के सिद्धान्त के बारे में मैंने बहुत कुछ समझ लिया था। सत्यभक्तजी से मेरा बहुत वार्तालाप भी हुआ। तर्क-वितर्क हुए, एवं भौतिकवाद और आत्मवाद, इतिहास की आर्थिक व्याख्या एवं श्रेणी-संघर्ष इत्यादि प्रश्नों को लेकर दिन-दिन भर तक आलोचनाएँ हुईं।" (बन्दी-जीवन पृष्ठ ३१६)

जैसा कि पहले वर्णन किया जा चुका है, शचीन्द्र बाबू के आदेश से उन दिनों भगतसिंह भी कानपुर में आगया था। शचीन्द्र ने "ए. बी. सी. आफ कम्यूनिज्म" नाम की पुस्तक मुझ से लेकर भगतसिंह आदि अपने दल के कितने ही लोगों को पढ़ने को दी। उन्हीं दिनों एक बार भगतसिंह स्वयं मेरे घर आकर "हिस्टरी आफ रशियन रिवोल्यूशन" (रूस की क्रान्ति का इतिहास) दस रुपये में खरीद कर ले गये थे। इसके पश्चात् रामनारायण बाजार स्थित सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य के मकान में कई बार शचीन्द्र, भगतसिंह, राधामोहनजी तथा मैं इकट्ठे होकर इस विषय में विचार विनिमय करते रहे। राधामोहन-जी कम्यूनिस्ट पार्टी की स्थापना में मेरे सहायक थे और कम्यूनिज्म तथा अराजकतावाद के सिद्धान्तों के जबर्दस्त समर्थक और प्रचारक थे। कम्यूनिज्म के प्रचार की आवश्यकता समझकर उन्होंने शीघ्र ही "कम्यूनिज्म क्या है" एक पुस्तक लिख डाली जिसे मैंने फरवरी १६२७ में ब्राह्मण प्रेस, कानपुर में छप-वाया था। बाद में यह पुस्तक क्रान्तिकारी दल के सदस्यों, खासकर कानपुर के कार्यकर्त्ताओं में अच्छी तरह प्रचारित की गई।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

क्रान्तिकारियों की दो श्रेणियाँ

भगतसिंह ने दूसरा काम यह किया कि दल को मजबूती के साथ संगठित करने और उससे सम्बन्धित सभी व्यक्तियों को उनकी स्थिति और कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए कार्यकर्त्ताओं का स्पष्ट रूप से श्रेणी विभाजन कर दिया। इस सम्बन्ध में श्री जितेन्द्रनाथ सान्याल ने अपनी "अमर शहीद सरदार भगतसिंह" में लिखा है।

"उक्त बैठक (दिल्ली की सभा) में यह भी निश्चय किया गया कि सङ्गठन को मोटे तौर पर दो भागों में विभक्त कर दिया जाय। एक भाग सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का हो और दूसरा समर्थकों का। सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का कार्य शस्त्रास्त्र संग्रह करना तथा छोटे-छोटे गुटों में कार्य करते हुए सामूहिक कार्यक्रमों के लिये जनता को तैयार करना था। सङ्गठन के इस अङ्ग का नाम "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी" (हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातान्त्रिक सेना) रखा गया। चन्द्रशेखर आजाद इस सेना के सेनापति बनाये गये। समर्थकों का काम था सार्वजनिक दान तथा सार्वजनिक चन्दे आदि के रूप में आवश्यक धन संग्रह करना, सक्रिय कार्यकर्त्ताओं को आश्रय देना तथा प्रचार करना।" (पृष्ठ ४४)

यह एक बहुत बुद्धिमत्तापूर्ण कदम था। कोई भी गुप्त क्रान्तिकारी दल केवल एक प्रकार के सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के द्वारा राष्ट्रोद्धार के कार्य में प्रगति नहीं कर सकता। उनका अंतिम उद्देश्य तो जन-जागृति और जनवादी शासन-व्यवस्था की स्थापना ही होता है। इसलिए उनके कुछ ऐसे सहायक होना आवश्यक होता है जो जन-सम्पर्क बनाने में उपयोगी सिद्ध हों। इसी दृष्टिकोण से शचीन्द्र ने बाबू भी "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन दल" का जो 'कार्यक्रम' या विधान तैयार किया था उसमें 'प्रकाश्य कार्यक्रम' और 'गुप्त कार्यक्रम' ऐसे दो विभाग रखे गए थे। प्रकाश्य कार्यक्रम के अन्तर्गत पुस्तकालय, व्यायामशाला, सेवा समिति के रूप में विभिन्न संस्थाओं की स्थापना, किसान-मजदूरों का सङ्गठन, साप्ताहित पत्र प्रकाशित करना, काँग्रेस आदि सार्वजनिक

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"जब लालाजी मरे तो उनकी मृत्यु अनिवार्य रूप से, उन पर जो हमला हुआ था उसके साथ संयुक्त हो गई और दुःख से कहीं बढ़ कर देश के लोगों में क्रोध भड़क उठा। इस बात को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि इसे समझ लेने पर ही हम बाद की घटनाओं को, विशेष कर भगतसिंह और उत्तर भारत में उनकी आकस्मिक और अद्भुत ख्याति को समझ सकते हैं। किसी कार्य की नींव का कारण समझे बिना उसके करने वालों की प्रशंसा या निन्दा करना कुछ महत्व नहीं रखता। भगतसिंह को पहले बहुत लोग नहीं जानते थे, पर वे इसलिये प्रसिद्ध हुए कि लोगों को ऐसा जान पड़ा कि उन्होंने कम से कम उस समय तो लाला लाजपतराय की और इस प्रकार सारे देश के सम्मान की रक्षा की। इस प्रकार वह एक प्रतीक हो गये। लोग उस कार्य को तो भूल गये, पर यह प्रतीक कुछ महीनों के अन्दर फैल गया और पंजाब का हर गाँव और शहर तथा उत्तर भारत उसके नामों से गूँजने लगा।"

साण्डर्स को दिन दहाड़े ठीक पुलिस के दफ्तर के सामने मार कर भगतसिंह अपने साथियों सहित साफ बच कर निकल गया और जब तक उसने स्वयं ही अपने को न पकड़वाया, तब तक पुलिस उसे हाथ न लगा सकी, यह एक अपूर्व सफलता मानी गई। साण्डर्स-वध के पश्चात् लाहौर का तमाम शहर खोज करने वाले जासूसों और अन्य छोटे-बड़े पुलिस वालों से भर गया था, गली-गली तथा कौने-कौने में मारने वालों की खोज की जा रही थी। हत्या के दूसरे ही दिन क्रान्तिकारी दल ने शहर भर में एक छोटा-सा लाल स्याही में छपा पोस्टर लगवा दिया था जिसमें लाला लाजपतराय की हत्या के बदले साण्डर्स का खून करने की बात खुले शब्दों में स्वीकार की गई थी। पोस्टर में यह भी कहा गया था कि "अँगरेजी सरकार सावधान रहे। वह चाहे जितना दमन करले, पर हम साण्डर्स जैसे कमीने लोगों को, जिसने देश के एक पूज्य नेता पर इस तरह हाथ उठाया, इसी प्रकार सजा देते रहेंगे।" पोस्टर पर "बलराज सेनापति हि. स. प्र. स." के हस्ताक्षर थे। यह बलराज, चन्द्रशेखर आजाद का ही दल का नाम था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

इस प्रकार की चुनौती दिये जाने से अँगरेज सरकार की शान उस दिन धूल में मिल गई और भारतीय जनता गर्व से फूल उठी थी। क्रान्तिकारी दल का नाम चारों तरफ फैल गया और जो नवयुवक दल तक रूखी रोटी के लिये भी परेशान थे आज सैकड़ों लोग उन्हें सहायता देने को तैयार हो गये। इस प्रकार जहाँ एक तरफ देशभक्त भारतीय प्राणों की बाजी लगाने वाले इन क्रान्तिकारियों के लिये पुष्प-वर्षा करने को तैयार थे, अँगरेज अफसर दाँत पीस रहे थे कि अगर उनको पा जायें तो जिन्दा ही चबा जायें। लाहौर से बाहर निकल सकने का हर एक रास्ता पुलिस ने घेर रखा था। पर तारीफ है क्रान्तिकारियों की सूझ-बूझ और साहस की कि भगतसिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद दोनों एक ही रेलगाड़ी से लाहौर स्टेशन से रवाना हो गये और पुलिस के हजारों जासूस खड़े देखते ही रह गये।

पुलिस की आँखों में धूल झोंकने के लिये भगतसिंह ने उस दिन "साहब बहादुर" का वेष बनाया था। बहुत बढ़िया कोट, पैण्ट, हैट, साथ में ऊँची एड़ियों का जूता पहिने सुन्दर पत्नी और गोदी में ढाई साल का बढ़िया सूट पहिने बेटा लेकर वह सुबह के पाँच बजे कलकत्ता मेल के फर्स्ट क्लास के रिजर्व डिब्बे में जाकर बैठा। पीछे-पीछे नौकर का वेष बनाये दरी का बिस्तर बगल में लिए राजगुरु चल रहा था। पत्नी का अभिनय करने वाली प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगवती चरण की बहू दुर्गा भाभी थी और वह बच्चा भी उसी का बेटा शची था। भगतसिंह और राजगुरु दोनों की जेबों में पिस्तौल थे और वे कोई भी खतरा सामने आते ही उसके लिये घोड़े पर उँगली रखे हुए थे। पर दुर्गा भाभी अपने तथा अपने पुत्र के प्राण इस संग्राम में झोंकने को उद्यत हो गई, इस कारण उसका नाम भी भारतीय-क्रांति-इतिहास में अमर हो गया। कलकत्ता स्टेशन पर उसके पति भगवती चरण ने, जो स्वयं सरकारी वारण्ट के कारण फरार अवस्था में थे, उनका स्वागत किया। अपनी पत्नी की इस वीरता और बुद्धिमत्ता को देखकर वह मुग्ध होकर बोल उठा—"वाह, मैंने आज तुम्हें पहिचाना।" इससे पहले वह उसे गाँव की लड़की समझकर क्रांतिकारी कार्यों के अयोग्य ही बतलाया करता था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कलकत्ते में भी भगतसिंह निष्क्रिय नहीं रहे। दिन में तो वे प्रायः घर के भीतर ही रहते थे, पर शाम को बङ्गाली बेषभूषा धारण करके बाहर निकलते। उस समय वहाँ कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था जिसके अध्यक्ष थे पं० मोतीलाल नेहरू। देश भर के नेता राजनीतिज्ञ और सरकारी गुप्तचर भी बड़ी संख्या में शहर में भरे पड़े थे। पर भगतसिंह किसी बात की चिन्ता न करके अपना काम करते रहे। उन्होंने पूर्व परिचित यतीन्द्रनाथ के साथ सलाह करके, उत्तर प्रदेश और पंजाब के कुछ व्यक्तियों को बम बनाने का शिक्षण दिये जाने की योजना बनाई। उस समय तक यह कला बङ्गाल के कुछ व्यक्तियों को ही ज्ञात थी। भगतसिंह चाहते थे कि स्थानीय कार्यकर्त्ता बम बनाना सीख लें तो आगे चलकर वे आत्म निर्भर हो सकेंगे।

असेम्बली बम काण्ड—

इस समय क्रांतिकारियों का उत्साह बहुत बढ़ा हुआ था। उनको अनेक स्थानों से सहायता भी मिल रही थी, जिससे दल के शस्त्रागार में बम और पिस्तौलें पर्याप्त मात्रा में संग्रह कर लिये गए थे। दल की केन्द्रीय समिति में यह चर्चा होती रहती थी कि अब कौन ऐसा काम किया जाय जिससे क्रांति-दल का नाम प्रसिद्ध हो, नवयुवकों को देश पर बलिदान होने की प्रेरणा मिले और जनता की सहानुभूति प्राप्त हो। कुछ मित्र यह सम्मति भी दे रहे थे कि भगतसिंह देश से बाहर चले जांय और वहीं रहकर भारतीय क्रांति दल को शस्त्र तथा धन की सहायता दिलाने का प्रयत्न करें, पर भगतसिंह इस प्रकार अपने साथियों को छोड़कर स्वयं सुरक्षित रहने के लिए किसी प्रकार राजी नहीं हुये। इस सम्बन्ध में मन्मथनाथ ने अपनी "भगतसिंह और उनका युग" पुस्तक में बतलाया है--

"जो कुछ भी बात हो भगतसिंह ने देश के बाहर जाने से इनकार कर दिया और जब उनके सामने यह विचार आया कि यहाँ रहने का अर्थ फाँसी पर चढ़ना है, तो उन्होंने इस ढंग से सोचना शुरू किया कि जब मरना ही है, तो क्यों न और भी खतरनाक काम किये जायँ। कहते हैं कि जब वह नेशनल कालेज में पढ़ते थे तभी उनके मन में क्रांति का विचार पैदा हो गया था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

संभवतः यह विचार उन्हें फ्रान्स की असेम्बली में बम फेंकने वाले फ्रांसीसी अराजकतावादी "वेलां" के किस्से से मिला था।

"मौका भी बहुत अच्छा था क्योंकि उन दिनों दिल्ली में दो अत्यधिक दमनकारी कानून पेश थे, और सरकार उन्हें पास करने पर कटिबद्ध थी। सरकार का उद्देश्य था कि जनता में क्रांति का जो बीज पनप रहा है, उसे अंकुरित होने के पहले ही समाप्त कर दिया जाय और जैसे भी हो भारत पर अपना शासन कायम रखा जाय। चन्द्रशेखर आजाद भी भगतसिंह की इस विचार-धारा से पूर्ण रूप से सहमत थे, क्योंकि भगतसिंह पर जितने इलजाम थे वे सभी उन पर भी लागू थे। यही नहीं जो दूसरे साथी थे वे भी लालायित थे कि कुछ न कुछ होता रहे। सिर पर कफन बाँधे लोगों की टोली थी। एक से एक अल्हड़ नौजवान थे जिनमें से प्रत्येक चाहता था कि मैं ही फाँसी पर पहले चढ़ूं।"

जब केन्द्रीय समिति द्वारा असेम्बली में बम फेंकने पर पूरी तरह से विचार कर लिया गया तब यह सवाल उठा कि इस इस कार्य के लिए किसको भेजा जाय ? वैसे तो सभी सदस्य इसके लिए तैयार थे, पर विचारणीय समस्या यह थी कि वह ऐसा व्यक्ति हो जो अदालत में क्रान्तिकारी दल के सिद्धान्तों और आदर्शों पर अच्छी तरह प्रकाश डाल सके। अभी तक क्रान्तिकारियों के कार्यक्रम में एक बड़ी त्रुटि यही थी कि छिपकर काम करने के कारण जनता उनको कुछ जोशीले अथवा हिंसा प्रिय युवकों का छोटा-सा समूह समझती थी। उनके आतंकवादी कार्यों के पीछे कोई गम्भीर बिचारधारा और उच्च आदर्श भी है, इसका बहुत कम लोगों को पता था। इसलिए भगतसिंह ने इस कार्य के लिए स्वयं ही जाने और गिरफ्तार होकर अदालत में उपर्युक्त उद्देश्य के अनुकूल बयान देने का निश्चय किया। इस सम्बन्ध में भगतसिंह के मनोभाव का परिचय देते हुए उनके एक सहकारी डा० भगवानदास माहौर ने लिखा है—

"सङ्कट के काम में तो वे (भगतसिंह) आगे रहने की जिद ही कर जाया करते थे। किसी सिपाही को सङ्कट का काम करने भेज दिया जाय

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

और नेता सुरक्षित बैठा हुक्म देता रहे, यह उन्हें कभी पसन्द नहीं था। यही कारण था कि असेम्बली में बम फेंकने के लिए स्वयं ही जाने की और फिर वहाँ खड़े रहने की उन्होंने जिद की, जब कि दल का और कोई सदस्य भगतसिंह के इस प्रकार जाने को ठीक नहीं समझता था। आजाद भी हर काम में आगे रहते थे। दूसरा कारण यह विचार भी था कि नेता के रूप में उन्हें अपने आपको सबसे अधिक खतरे में डालना चाहिए, नहीं तो गुप्त-दल में 'दादागीरी' अपने बुरे अर्थ में आने से न रुकेगी और सिपाहियों का नेताओं में विश्वास न रहेगा।"

इस वर्णन से हम समझ सकते हैं कि क्रान्तिकारी दल में सैकड़ों अन्य शहीदों के होते हुए भी भगतसिंह और आजाद की युगल-जोड़ी को ही सबसे ज्यादा प्रसिद्धि क्यों मिली? भाई परमानन्द और जयदेव विद्यालंकार भी पंजाब में क्रान्तिकारी दल को सङ्गठित करने वाले बहुत बड़े नेता माने जाते थे, पर सामने न आने की त्रुटि के कारण वे पीछे ही रह गये। इतना ही नहीं भाई परमानन्द का फैसला करने वाले जज ने यहाँ तक लिख दिया कि "भाई परमानन्द कायर क्रान्तिकारी हैं, जो दूसरों को तो प्रेरणा देकर आगे भेजते रहे पर स्वयं अपनी जान बचाते रहे।" भगतसिंह इस तथ्य को समझकर सदा आगे बढ़कर खतरे में कूदे और इसलिए जनता की दृष्टि में वे क्रान्तिदल के प्रतीक ही बन गये। यही बात चन्द्रशेखर आजाद के विषय में सोलह आने सच है। उन्होंने अँग्रेजों की टुकड़खोर पुलिस के हाथों कभी न पकड़े जाने की प्रतिज्ञा की थी, उसको जिस शान से निबाहा और पचासों सिपाहियों तथा अफसरों से युद्ध करते हुए वीरगति पाई उससे वे भी एक "अमर-गाथा" के नायक बन गये थे।

राजगुरु के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वह भगतसिंह से भी आगे बढ़कर खतरे में कूदने को तैयार रहता था। इस दृष्टि से भगतसिंह का "प्रतिद्वन्दी" बनने की कोशिश किया करता था। पर विद्याबुद्धि की दृष्टि से बहुत कम होने के कारण उसने अधिक नामवरी हासिल नहीं की। फिर भी वह धुन का ऐसा पक्का था कि साण्डर्स काण्ड में उसी ने सबसे आगे दौड़कर एक ही

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

गोली से उसका ढेर कर दिया और फाँसी के तख्ते पर चढ़ने में भी भगतसिंह से एक कदम आगे ही चलता रहा।

कहाँ ये आत्मत्यागी बहादुर, जिन्होंने करोड़ों लोगों के उद्धार के लिए स्वेच्छा से हँसते-हँसते प्राणों की आहुति दे दी और कहाँ वे "अध्यात्म" और "जगत की असारता" का डङ्का पीटने वाले साधू-महात्मा और धर्मगुरु कहलाने वाले, जो जरा-सा खतरा आते ही सब "सिद्धाँत" भूल जाते हैं और जान बचाने के लिए हाथ-पैर जोड़ने और गिड़गिड़ाने में भी लज्जा अनुभव नहीं करते। यदि इस दृश्य को देखकर कोई कहे कि हिन्दू समाज और धर्म की निर्बलता का कारण ऐसे "ढोंगी धर्मात्मा" ही हैं तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं मानी जा सकती। इससे भी बुरा हाल आजकल के राजनीतिक नेताओं का हो रहा है। तिलक और गाँधी के उत्तराधिकारी बनने वाले ये नेतागण किस प्रकार स्वार्थ-साधन की कीचड़ में डूब गये हैं और बेशर्मी के साथ खाने-कमाने को ही मुख्य उद्देश्य बनाये हुए हैं, उसे देखकर गर्दन शर्म से झुक जाती है। ऐसी दशा में यदि हम भगतसिंह और चन्द्रशेखर जैसे निःस्वार्थ त्याग का आदर्श उपस्थित करने वाले युवकों के जीवन से प्रेरणा लें तो इसमें क्या अनुचित है?

लाहौर षड़यन्त्र केस और भूख हड़ताल

असेम्बली में सरकार के "बहरे कानों" में भारतीय जनता की माँग की आवाज को पहुँचाने के लिए भगतसिंह और उसके साथी बटुकेश्वर दत्त ने किस प्रकार बम का धड़ाका किया और फिर कैसी निडरता के साथ अपने को गिरफ्तार कराया, इसका हाल क्राँतिकारी इतिहास के सभी पाठक जानते हैं। इन घटनाओं में भगतसिंह का उद्देश्य केवल एक सनसनी पैदा कर देना नहीं था, वरन् वह अँग्रेजों की अदालत में बयान देने के बहाने क्रांतिकारी दल के सिद्धान्तों का प्रचार करना और भारतीय जनता की भावनाओं को ऊँचा उठाना चाहता था। वैसे तो सरकार अपने विरुद्ध कही गई किसी भी बात को तुरन्त राजद्रोह बतलाकर लेखकों और सम्पादकों पर मुकदमा चला देती थी, पर उन्हीं बातों को अदालत में कहने और फिर रिपोर्ट के रूप में समाचार

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

पत्रों में छप जाने पर सरकार का कुछ बस नहीं चलता था। भगतसिंह और उनके साथी अच्छी तरह जानते थे कि इस तरह पकड़े जाने पर उनको फाँसी के फन्दे पर लटकना पड़ेगा, पर अपने विचारों के देशव्यापी प्रचार हो सकने का यह उपाय उनको इतना पसन्द आया कि उन्होंने खुले तौर बम फेंक कर गिरफ्तार होने में कुछ भी संकोच नहीं किया।

भूख-हड़ताल द्वारा प्रचार

जेल में बन्द कर दिये जाये पर भी भगतसिंह इसी उद्देश्य को पूरा करने में लगा रहा। उसने इस बात की पूरी कोशिश की कि मुकदमा किसी प्रकार लम्बा होता जाय और वह अदालत में क्रांतिकारी दल के सिद्धान्तों की व्याख्या और स्पष्टीकरण करके जनता में जोश तथा सरकार के प्रति अप्रीति की भावना को बढ़ाता रहे। इसके लिए क्रांतिकारियों ने 'भूख-हड़ताल' के अस्त्र को अपनाया। सरकार तो इन युवकों से जली-भुनी बैठी ही थी, बस उसके मैजिस्ट्रेट और जज इनको हर तरह से तंग और अपमानित करने का प्रयत्न करने लगे। इधर इन वीर युवकों ने शत्रु के बन्धनों में रहते हुए भी यह संग्राम छेड़ दिया कि जब तक उनके साथ जेलों में मानवोचित व्यवहार न किया जायगा और अदालत में उनके सम्मान की पूरी तरह रक्षा न की जायेगी तब तक वे न तो जेल का भोजन करेंगे और न अदालत की कार्यवाही में भाग लेंगे। इससे चिढ़कर सरकार ने और भी अधिक सख्ती करने और जबर्दस्ती भोजन कराने का निश्चय किया। इस संघर्ष ने बड़ा भयंकर रूप धारण किया था और भगतसिंह तथा उनके साथियों ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर सरकार को नीचा दिखाया था। उनका उद्देश्य केवल अपने लिए खान-पान की सुविधा या ऊँची क्लास का व्यवहार प्राप्त करना ही नहीं था। १४ जुलाई १९२९ को भारत सरकार के पास इस सम्बन्ध में जो पत्र भेजा गया था, उसमें भगतसिंह ने लिखा था—

"हर एक जेल में राजनैतिक कैदियों का एक विशेष वार्ड होना चाहिए, जिसमें उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति की सुविधा होनी चाहिए जो

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यूरोपियनों के लिए होती हैं। उनके भोजन का स्तर भी यूरोपियन कैदियों के समान होना चाहिए।"

यह भूख हड़ताल करते समय भगतसिंह की मानसिक स्थिति कैसी थी यह इन वाक्यों से विदित होता है—

"बन्दी होने के पश्चात् हमारी संस्था के राजनैतिक कैदियों की दशा अत्यन्त दयनीय थी। हमने प्रयास आरम्भ कर दिया। मैं आपको पूरी गम्भीरता से बताता हूँ कि हमें यह विश्वास था कि हम बहुत कम समय के भीतर मर जायेंगे। हमें उपवास के दिनों में कृत्रिम रीति से भोजन दिये जाने (फोर्सफुल फीडिंग) का न तो कोई अनुभव ही था और न यह विचार ही कभी सूझा था। हमतो मृत्यु के लिए तैयार थे।"

यह "जबर्दस्ती भोजन" कराना कैसा भयंकर होता है, इसे भुक्तभोगी ही जानते हैं। चार-छः हट्टे-कट्टे सिपाही कैदी को दबा लेते हैं और तब डाक्टर उसकी नाक में रबड़ की नली डालकर दूध को पेट में भरता है। पर ये क्राँतिकारी युवक उस समय भी हिल डुल कर या खाँसकर उस दूध को बाहर निकालने का प्रयत्न करते थे। ऐसा करते हुए वह दूध अमर शहीद यतीन्द्र दास के फेंफड़ों में चला गया, जिससे उसे मरणान्तक कष्ट सहन करना पड़ा। भगतसिंह और उनके अन्य साथियों को भी इस संघर्ष ने इतना कमजोर कर दिया कि उनको "स्ट्रैचर" पर डालकर अदालत में लाना पड़ता था। सरकार ने उनका संकल्प तोड़ने के लिये उनकी कोठरियों में पानी की जगह दूध भरवा कर रखवा दिया, बढ़िया खाने भी रखे गये, पर उन लोगों ने सब चीजें बाहर फेंक दीं।

अन्त में भगतसिंह और साथियों को कुछ सफलता मिली। सरकार ने एक "जेल कमेटी" नियुक्त करदी और उसकी जांच पूरी हो जाने पर राजनीतिक कैदियों के साथ ठीक व्यवहार किए जाने का वचन दिया। तब कहीं जाकर अनशन भंग हुआ। इसका एक उद्देश्य जनता में अधिक से अधिक आन्दोलन होना और सरकार के प्रति रोष तथा घृणा उत्पन्न करना भी था। वह भी इस कष्ट सहन से अधिकांश में पूरा हुआ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

भगतसिंह की साम्यवादी विचारधारा

भगतसिंह के लिए यह एक बड़ी प्रशंसा की बात है कि उसने बम और पिस्तौलों को ही मुख्य आधार मानने वाले क्रांति आन्दोलन को थोड़े ही समय में साम्यवाद का अनुयायी बना दिया। यद्यपि भगतसिंह से पहले बंगाल में और पंजाब में बड़े-बड़े साहसी और प्राणों को तिनके की तरह अर्पण कर देने वाले क्रांतिवीर उत्पन्न हो चुके थे, पर उनके सामने क्रांति की सफलता के पश्चात् नवीन समाज की रचना का कोई स्पष्ट चित्र न था। अधिकांश लोग तो राजनीतिक और क्रांतिकारी आन्दोलन का यही उद्देश्य समझते थे कि देश के शोषणकर्त्ता अँग्रेजों को हटाकर भारतियों का शासन स्थापित हो जाय। पर वह शासन कैसा हो और उसमें जनता के क्या अधिकार हों इस सम्बन्ध में अधिकांश लोग कुछ सोचते ही न थे और यही विचार कर सन्तोष कर लेते थे कि जब विदेशी लोग हट जायेंगे और उनकी जगह भारतीय नियुक्त हो जायेंगे तो सब त्रुटियां और शिकायतें अवश्य ही दूर हो जायेंगी। यह एक बहुत ही अस्पष्ट और भ्रमपूर्ण विचार था और भगतसिंह ने इसे एक बड़ी हद तक दूर करने की चेष्टा की थी।

यद्यपि भगतसिंह सन् १९२१-२२ में नेशनल कालेज में पढ़ते समय ही वहाँ की लायब्रेरी से क्रांति के साथ साम्यवाद की पुस्तकें भी पढ़कर इस तरफ आकर्षित हो गये थे। पर उस पन्द्रह वर्ष की आयु में एकाएक साम्यवाद के रहस्य को हृदयंगम कर लेना सहज न था। इसी कारण जब एक वर्ष बाद वे कानपुर में आकर वहाँ के क्रांतिकारी युवकों से मिले जो उन्हीं की उम्र के थे तो उनके विचार बहुत अपूर्ण थे। अजय घोष ने, जो बाद में भारतीय साम्यवादी दल (कम्यूनिस्ट पार्टी) के सेक्रेटरी बने, लिखा है कि "उस समय भगतसिंह एक देहाती लड़के के नमूने थे। ये वे दिन थे। जब हम क्रांति के सपने देखा करते थे—लड़कों के से सपने। लगता था कि क्रांति अब कोई दूर नहीं हैं। पर भगतसिंह क्राँति के आसन्न होने के बारे में उतने आश्वस्त न थे, इसी कारण मैं उनके निराशा वादी दृष्टिकोण का मजाक उड़ाता था।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

यही वह समय था कि भगतसिंह मेरे (सत्यभक्त के) सम्पर्क में भी आये। मैं उस समय कानपुर में रहकर मजदूर आन्दोलन और साम्यवाद के प्रचार में संलग्न था। उत्तर भारत के क्रांतिकारी दल के प्रधान नेता शचीन्द्रनाथ सान्याल से मेरा परिचय था। वे एक बार तीन चार दिन मेरे घर में रहकर कम्यूनिज्म की किताबें पढ़ चुके थे और मुझ से इस सम्बन्ध में काफी बात चीत और विचार विनिमय भी करते रहते थे। (इसका पूरा विवरण शचीन्द्रनाथ सान्याल की "बन्दी जीवन" पुस्तक के पृष्ठ ३१६ पर दिया गया है) तत्पश्चात् शचीन्द्र ने अपनी पार्टी के सदस्यों को भी वे सब बातें समझाई और कुछ पुस्तकें भी पढ़ने को दीं। स्वयं भगतसिंह एक दिन मेरे घर आकर "रूस की राज्य क्रांति" सम्बन्धी एक पुस्तक खरीदकर ले गये। इसके अगले महीनों में कई बार ऐसे अवसर भी आये तब कम्यूनिज्म और मजदूर संगठन आदि के सम्बन्ध में शचीन्द्र, भगतसिंह, राधामोहन गोकुल-जी और मेरी काफी समय तक बातें होती रहीं। हम लोगों के मिलने का स्थान उस समय कानपुर क्राँतिकारी दल के मुख्य संचालक श्री सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य का रामनारायण बाजार वाला मकान था।

इस प्रकार जैसे-जैसे समय बीतता गया भगतसिंह के क्रांति सम्बन्धी विचार परिपक्व होते गये और ८ सितम्बर सन् १६२८ को दिल्ली के फिरोजशाह किले में की गई "हिन्दुस्तान रिपब्लिकन असोसिएशन"(क्रांतिकारी दल) की बैठक में उन्होंने जोर देकर उसके नाम में "साम्यवादी" शब्द शामिल करा दिया। इस घटना का वर्णन करते हुये श्री जितेन्द्रनाथ सान्याल ने लिखा है—

"इस प्रकार हम देखते हैं कि भगतसिंह ने उक्त बैठक में समाजवादी कार्यकर्त्ता की भूमिका अदा की तथा उनके जोरदार तर्कों के फलस्वरूप समाजवादी सिद्धान्तों के आधार पर कार्यक्रम तैयार किया गया।"(पृष्ठ ४३)

भगतसिंह की इस विचार धारा का सबसे महत्त्वपूर्ण प्रकाशन और स्पष्टीकरण उस समय हुआ जब उसने असंम्बली बम केस के अवसर पर दिल्ली की अदालत में अपने कार्य का औचित्य सिद्ध करते हुये कहा—

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

"समाज का वास्तविक पोषक श्रमजीवी है। जनता का प्रभुत्व मजदूरों का अंतिम भाग्य है। इन आदर्शों और विश्वास के लिये हम उन तमाम कष्टों का स्वागत करेंगे, जिनकी हमें सजा दी जायेगी। हम अपनी तरूणाई को इसी क्रांति की बंदी पर होम करने लाये हैं, क्योंकि इतने गौरवशाली उद्देश्य के लिये कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नहीं है।.....

"समाज का सबसे आवश्यक अंग होते हुये भी उत्पादन करने वालों या मजदूरों से शोषक गण उनकी मेहनत का फल लूट लेते हैं। एक ओर तो, सभी के लिये अनाज पैदा करने वाले किसानों के परिवार भूखों मरते हैं— सारे संसार को सूत जुटाने वाला बुनकर अपना और अपने बच्चों का तन ढकने के लिये पर्याप्त कपड़ा नहीं पाता, शानदार महल खड़ा करने वाले राज, लुहार और बढ़ई, झोंपड़ियों में ही बसर करते और मर जाते हैं। और दूसरी तरफ पूंजीपति, शोषक अपनी सनक पर करोड़ों बहा देते हैं।

"क्राँति से हमारा आशय यह है कि समाज में एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना की जाय, जिसमें इस प्रकार के हडकम्प का भय न हो और जिसमें मजदूर-वर्ग के प्रभुत्व को मान्यता दी जाये और उसके फलस्वरूप विश्व-संघ पूंजीवाद के बंधनों, दुखों तथा युद्धों से मानवता का उद्धार करसके।"

ज़ैसे-जैसे भगतसिंह कम्यूनिज्म तथा समाजवाद के अन्य सिद्धान्तों का अध्ययन करके उनके मूल तथ्य को हृदयंगम करते गये उनका यह दृढ़ मत होता गया कि क्रांति का वास्तविक मार्ग मेहनत पेशा लोगों को जागृत तथा संगठित करना ही है।

थोड़े से युवक आतंकवादी कार्य करके इस महान उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकते थे। अपनी फाँसी से कुछ ही पहले लाहोर सेंट्रल जेल के सुपरिन्टेन्डेण्ट के नाम लिखे गये एक पत्र में उन्होंने कहा था—

"यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमको बमों और पिस्तौलों से लाभ नहीं होगा। "हिन्दुस्तान साम्यवादी प्रजातंत्रयि समिति" के इतिहास से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है। बम चलाना निरर्थक ही नहीं, अक्सर हानिकारक भी होता हैं, हाँलाकि कुछ परिस्थितियों में उसकी अनुमति दी जा सकती है।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

हमारा मुख्य उद्देश्य मजदूरों और किसानों को संगठित करना ही होना चाहिये।"

फाँसी की कसौटी पर —

राजनीतिक क्षेत्र में भी ऐसे लोगों का अभाव नहीं होता जो आरम्भ में तो लम्बी चौड़ी बातें करते हैं, बड़े साहसी और आत्म-बलिदानी बनने का दावा करते हैं, पर जब अवसर आता है तो हार मान कर आत्म-समर्पण करने में भी संकोच नहीं करते। साधारण आन्दोलनकारी लोगों की बात छोड़ दीजिये, क्रांतिकारी दल में ही ऐसे लोग भरे पड़े थे। भारतीय क्रांति सम्बन्धी पुस्तकों को पढ़ने से अनुमान होता है कि लगभग आधे क्रांतिकारी पकड़े जाने पर पुलिस के आज्ञाकारी मुखबिर बन गये थे। और तो क्या हमारे सामने ही वीरभद्र, कैलाशपति, फणीन्द्रनाथ, जयगोपाल, शिवचरनलाल, बनवारीलाल जैसे प्रमुख व्यक्ति थोड़े से भय या लालच के कारण गद्दार बन गये। यशपाल जैसे महत्त्वपूर्ण सदस्य का आचरण भी आक्षेप योग्य जान पड़ता है। ऐसी स्थिति में हम जब अन्य क्रांतिकारियों के कारनामों पर विचार करते हैं तो हमको भगतसिंह, चन्द्रशेखर, राजगुरु, सुखदेव, यतीन्द्रदास, महावीरसिंह, विजयकुमार, आदि कुछ ही सदस्य ऐसे जान पड़ते हैं जो निर्भय होकर अन्त तक क्रांति-मार्ग पर दृढ़ रहे और जिन्होंने पुलिस के 'टार्चर' (कष्टों) और जेलखाने की कठिनाइयों की कुछ परवाह न करके एक ऊँचे लक्ष्य को सामने रखा। कम प्रसिद्ध सदस्यों में से भी अनेक हृदय से क्रांति के पक्के अनुयायी और हर तरह से दृढ़ थे। उदाहरण के लिए हमारे सामने शालिगराम का नाम है जिसने बीसियों सिपाहियों से घिर जाने पर भी बड़ी शान से संग्राम किया और गोली लगकर गिर जाने पर भी बड़ी चतुराई से दो सिपाहियों को मार दिया। पर इन सब में भगतसिंह को जो प्रमुख स्थान मिला उसका कारण यही है कि उन्होंने ढूँढ़-ढूँढ़ कर क्रांति आन्दोलन को अग्रसर और लोकप्रिय बनाने के कार्य किये। यह भगतसिंह की सूझ-बूझ और चतुरता का ही परिणाम था कि लाहोर षड़यंत्र केस लगभग डेढ़-दो वर्ष तक बढ़ता चला गया और इस बीच में क्रान्ति-दल को इतनी प्रसिद्धि मिल गई कि

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

देश के सर्वोच्च नेता उसे काँग्रेस के मुकाबले का समझने लगे। इस कार्य की सिद्धि के लिए भगतसिंह अपने प्राण अर्पण करने का किस प्रकार अटल निश्चय कर चुके थे, यह उनके निकटतम सहकारी श्रीविजयकुमार के एक लेख से प्रकट होता है, जो कुछ ही दिन पहले "पेट्रियट" में प्रकाशित हुआ है। उसमें लेखक ने बतलाया है कि जब भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव—तीनों को फाँसी का दण्ड सुनाया जा चुका तो दिसम्बर १९६० में एक दिन उसे भगतसिंह की काल कोठरी में प्रिवी कौंसिल में अपील के सम्बन्ध में विचार करने को ले जाया गया। भाई से भी बढ़कर अपने प्रिय साथी के साथ इस अंतिम भेंट के समय विजय के हृदय में एक तूफान उठ रहा था और भावावेग के कारण उसके मुँह से आवाज नहीं निकल रही थी। भगतसिंह भी उसकी दशा देखकर द्रवित होने लगा। पर जेलर के चेतावनी देने पर उसने अपने को सँभाल कर कहा—

"पं० मोतीलाल जी नेहरू ने अपनी बीमारी की हालत में शिमला से एक विशेष दूत हमारे पास भेजकर अत्यन्त आग्रह किया है कि हम फाँसी की सजा के विरुद्ध इंगलैण्ड की प्रिवी कौंसिल में अवश्य अपील करें। इससे कुछ समय मिल जायेगा, जिसमें सरकार से समझौते की वार्ता कदाचित् सफल हो जाय और समस्त राजनैतिक कैदियों को क्षमा दान मिल सके। मोतीलाल जी ने कहलाया है कि उनका यह आग्रह समस्त राष्ट्र की तरफ से समझा जाय।" आगे चलकर विजय कुमार लिखते हैं—

"मुझे आज भी याद आते हैं भगतसिंह के वे शब्द जो उन्होंने अन्त में कहे—"भाई, ऐसा न हो कि फाँसी रुक जाय!" यद्यपि भगतसिंह को सरकार द्वारा क्षमादान की तो जरा भी आशा नहीं थी, पर उसे यह खयाल अवश्य था कि उनके मुकदमे में सरकारी पक्ष की गवाहियाँ कमजोर थीं और अदालत में एक तरफा कार्यवाही करके सजा देदी गई थी, इसलिए अपील करने पर शायद फाँसी की सजा हटादी जाय और इस प्रकार उसे अपने प्राण देकर क्रांति के उद्देश्य को आगे बढ़ाने का मौका न मिले। उसने स्पष्ट कहा कि "इस अवसर पर अपनी मृत्यु द्वारा ही वह अपने दल के उद्देश्य की सबसे

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

अधिक सेवा कर सकता है।" जब कि दुनिया के सभी व्यक्ति सदैव दीर्घ जीवन के लिए ही हाथ-पैर मारते रहते हैं, तब भगतसिंह का दूसरों के लिए प्राणोत्सर्ग करने के लिए दृढ़-निश्चय बने रहना क्या हमारे लिए प्रेरणाप्रद नहीं है ? यदि हम समस्त समाज के हितार्थ अपना कुछ समय, श्रम, धन, भी लगाने को तैयार न हों तो ऐसे मानव-जीवन का क्या महत्त्व समझा जा सकता है ?

"अपील की बातचीत पूरी हो गई यह देखकर जेलर ने मुझे वापस चलने का इशारा किया। एक क्षण के लिए मैं और भगतसिंह एक-दूसरे के आलिंगन में आबद्ध हो गये। भगतसिंह फिर मुस्कराने लगा। पर इस समय उसका मनोभाव स्पष्ट था कि यह हमारी आखिरी भेंट है। अपनी कोठरी में पहुँचने पर मेरा दिमाग पारस्परिक संस्मरणों से भरा हुआ था। मुझे याद आया कि किस प्रकार उसने, राजगुरु के साथ दिन दहाड़े पुलिस के दफ्तर के ठीक सामने साण्डर्स को गोली मारकर खत्म कर दिया। उस समय हम सब सैकड़ों कारतूस साथ लेकर गये थे, क्योंकि हमारा अनुमान था कि पुलिस वाले हमको पकड़ने दौड़ेंगे और हम वहाँ उनके साथ खुला युद्ध करके प्राण देंगे।" उस समय पुलिस के "वीरों" ने सामने आने की जरा भी हिम्मत नहीं की, जिससे मरने-मारने का मौका टल गया। पर अन्त में भगतसिंह ने अपना आत्म-बलिदान कर ही डाला। उसका यह कार्य इतना प्रभावशाली हुआ कि देश में हड़तालों, जुलूसों, विरोध-सभाओं का ताँता लग गया और सर्वत्र भगतसिंह का नाम गूँजने लगा। काँग्रेस के एक बहुत बड़े नेता श्री पट्टाभि सीतारमैया ने अपने काँग्रेस के सुप्रसिद्ध इतिहास में लिखा है कि "यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि भगतसिंह का नाम उस समय उतना ही लोकप्रिय था जितना गाँधीजी का।" स्वयं गाँधीजी ने भी भगतसिंह के मृत्यु-दण्ड का समाचार पाकर अपने एक वक्तव्य में कहा था—

"हमारे देश में दबने और डरने का भाव कायरता की सीमा तक पहुँच गया है। इस कारण हम अपने यहाँ बहुत अधिक वीरता और आत्म-

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

बलिदान की आशा नहीं रख सकते। ऐसी दशा में हमारे मस्तक भगतसिंह की बहादुरी और बलिदान के समक्ष झुक जाते हैं।"

पं० जवाहरलाल जी नेहरू ने कहा था कि—"हम भगतसिंह को न बचा सके, हमारी इस असमर्थता पर देश दुःखी होगा। पर जब इंगलैण्ड हमसे समझौते की बात करेगा तो हमारे और उसके बीच भगतसिंह की लाश भी पड़ी होगी।"

भगतसिंह को अंतिम क्षण तक मृत्यु की भयङ्करता का तनिक भी भय नहीं हुआ, जो मानव-मात्र को आतंकित कर देती है। मरने के दिन उसने अपने भाई को पत्र में ये अमर वाक्य लिखे थे—"एक दीपक की लौ की तरह मैं सुबह होने के पहले ही खत्म हो जाऊँगा। यह मुट्ठी भर खाक अगर नष्ट हो जाय तो इससे क्या हानि होगी?" उसी समय उसने पंजाब के गवर्नर ओडायर के नाम एक पत्र लिखा जिसमें जोर देकर कहा था—"हमारा युद्ध हमेशा नये जोश, अधिक सावधानी और अटल निश्चय के साथ उस समय तक चलता रहेगा, जब तक भारत में 'साम्यवादी प्रजातन्त्र' की स्थापना न हो जायेगी।...अब पूँजीवाद और साम्राज्यवाद के दिन इने-गिने रह गये हैं। यह संग्राम न तो हमने आरम्भ किया था और न वह हमारे प्राण-त्याग से समाप्त हो जायेगा। हमारा यह तुच्छ बलिदान तो उस शृङ्खला में केवल एक कड़ी की तरह है।"

ऐसे निर्भीक और कर्त्तव्य-परायण युवकों पर भारतमाता जितना गर्व करे कम है। इतना ही नहीं वे समस्त मानवता के लिये श्रद्धा के पात्र हैं। उन्होंने जीवन के अंतिम समय तक अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया। हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि आजकल के भारतीय युवक, जो अधिकांश में कुमार्ग अथवा अविवेकपूर्ण कार्यों की तरफ कदम बढ़ाते जाते हैं, जो अपनी शक्ति को गुण्डापन, अनैतिकता में लगाना तारीफ समझते हैं, वे भगतसिंह के आदर्श चरित्र से कुछ शिक्षा ग्रहण करें, जिसने अपनी भरी जवानी मातृभूमि की वेदी पर हवन करदी। फाँसी का फन्दा हँसते हुए अपने गले में डालते समय उसकी उम्र पूरे चौबीस वर्ष की भी नहीं हुई थी। इन्हीं थोड़े से वर्षों में वह बिना किन्हीं विशेष साधनों के केवल अपने साहस और बलिदान के बल पर

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वह काम कर गया, जिसके लिए स्वतन्त्रता तथा न्याय परायणता के सभी प्रेमी उसके सम्मुख नतमस्तक होते रहेंगे। नित्यप्रति हजारों मनुष्य तरह-तरह से अकाल मृत्यु के मुँह में चले जाते हैं, पर जो भगतसिंह की तरह दूसरों के लिए जीवन अर्पण कर देता है वही इस नश्वर जगत में अमर होजाता है।

भगतसिंह के आत्म बलिदान का प्रभाव—

हमारे मतानुसार त्याग और बलिदान ही सच्चे धर्म और आस्तिकता की पहचान है। मन्दिर में पूजा करना, कण्ठी-माला-तिलक धारण करना, आसन पर बैठकर घन्टों जप करना आदि बाह्य क्रियाएँ अधिक महत्व नहीं रखतीं। इतना ही नहीं वर्तमान समय में तो यह दिखाई दे रहा है कि अधिकांश व्यक्ति इन कार्यों को केवल अभ्यासवश या एक अंधविश्वास के रूप में करते हैं। इस कारण विचारशील लोगों का विश्वास इन पर से हट रहा है। ऐसे लोगों की भी कमी नहीं जो इस प्रकार का पूजा-पाठ एक ढोंग के रूप में, दूसरों को ठगने के लिए, अपने कुकृत्यों को छिपाने के लिए करते हैं। हमने ऐसे लोग देखे हैं जो प्रसिद्ध गुण्डे थे, जुआ खिलाने का रोजगार किया करते थे, पर नित्यप्रति गङ्गा-स्नान करके जल के भीतर आधा घन्टा खड़े रहकर भजन और जप भी करते थे। ऐसे ही लोगों ने "धर्म" को बदनाम कर दिया है, और उसी आधार पर बहुत से व्यक्ति उसकी निन्दा और विरोध करने में प्रवृत्त हो जाते हैं।

हम कहना चाहते हैं कि धर्म और आध्यात्मिकता का स्वरूप वह नहीं है जो अशिक्षित अथवा अन्ध विश्वासी जन-समूह में फैला है, और जिसको लाखों पंड़ा पुजारियों और भिखारियों ने जीवन-निर्वाह का साधन बना रखा है। इसके विपरीत वास्तविक धर्म वह है, जिसे भगतसिंह अथवा लेनिन जैसे क्रांतिकारियों ने अपने त्याग और बलिदान द्वारा सर्वसाधारण के सामने उपस्थित किया है। चाहे ये दोनों क्रांतिकारी "नास्तिक" के नाम से प्रसिद्ध हो गये, पर यह निश्चय है वे कि सच्चे धर्म के खिलाफ न थे, वरन् उपर्युक्त श्रेणी के ढोंगी "धर्म-कर्म" वालों ने ही उनको वैसा बना दिया था। इस धर्म विरोधी विचार धारा के मुख्य प्रचारक कार्लमार्क्स और माइकेल बकुनिन जैसे महान साम्यवादी थे, पर हम कह सकते है कि उनका यह

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

वक्तव्य कि "धर्म लोगों के लिये अफीम है" वास्तविक मानव-धर्म से कोई ताल्लुक नहीं रखता। उनका आशय यही था कि पादरी, मुल्ला, पंडा-पुजारी आदि धर्म के नाम पर सामान्य जनता को बहकाया करते हैं और "ईश्वरीय न्याय" तथा "भाग्य" आदि का भरोसा दिला कर अन्याय अत्याचार सहते रहने की प्रेरणा दिया करते हैं। धर्म के इसी विकृत रूप का वे विरोध करते थे।

भगतसिंह को हम मानव-धर्म का एक श्रेष्ठ अनुयायी मानते हैं। जिस व्यक्ति ने कभी अपने आराम की तरफ ध्यान न दिया और तन-मन-धन परोपकार के कार्य में ही लगाया, जिसने अपनी स्वेच्छा से बुलाई मृत्यु का भी अधिकाधिक देश के हित के लिये उपयोग किया, उसकी महानता से कोई कैसे इनकार कर सकता है। कोई उसे कैसे "अधार्मिक" कह सकता हैं ? सेवा धर्म सबसे भारी धर्म है ? जिसने उसके लिये अपने प्राणों को तिल-तिल करके जलाया वह तो सबसे बड़ा 'धार्मिक" ही कहा जायगा।

जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं इंगलैण्ड की प्रिवी कौंसिल में अपील करने की भगतसिंह की तनिक भी इच्छा न थी। वह अपनी मृत्यु द्वारा नवयुवकों को प्रेरणा देकर राष्ट्रोद्धार के कार्य में तेजी लाने का निश्चय कर चुका था। पर जब यह सुझाया गया कि इस उपाय से क्रांतिकारी आन्दोलन की कई प्रकार से वृद्धि होगी तो वह उसके लिये तैयार हो गया। इस कार्य में जो लाभ सोचे गये थे, उनके सम्बन्ध में "अमर शहीद सरदार भगतसिंह" के लेखक का मत है—

"प्रिवी कौंसिल में अपील के द्वारा भगतसिंह सभ्य संसार को यह बता देना चाहता था कि भारत में राजनीतिक बन्दियों के साथ किस प्रकार का अमानुषिक व्यवहार किया जाता है। दूसरा उद्देश्य इंगलैण्ड के शत्रु राष्ट्रों को इस अपील के माध्यम से यह सूचित करना था कि भारत में समाजवादी क्रान्तिकारी पार्टी भी अस्तित्व में है। तीसरी बात यह थी कि फाँसियों को तब तक के लिये स्थगित कराया जाय जब इनका जनता पर सर्वाधिक प्रभाव पड़े।"

मन्मथनाथ गुप्त ने भगतसिंह की इस मनोवृत्ति पर प्रकाश डालते हुये लिखा है कि साण्डर्स-काण्ड के पश्चात् कुछ मित्रों ने जब यह सुझाव दिया

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

कि भगतसिंह देश से बाहर जाकर काम करें तो उन्होंने इससे इनकार कर दिया। "जब उनके सामने यह विचार आया कि यहाँ रहने के माने फांसी पर चढ़ना है, तो उन्होंने इस ढंग से सोचना शुरू किया कि जब मरना ही है, तो क्यों न और भी खतरनाक काम किये जायें।"

स्वयं भगतसिंह ने जेल के भीतर अपने साथियों और वकील से प्रिवी कौंसिल में अपील करने के सम्बन्ध में यही विचार व्यक्त किये थे कि "फांसी तब हो जब देश की जनता का जोश अपने पूरे उफान पर हो और उसका पूरा ध्यान इस ओर केन्द्रित हो।"

अपने प्राणों के साथ इस तरह निस्पृह भाव से खिलवाड़ कर सकना और राजनीति की शतरंज में उसका इस प्रकार उपयोग करना जैसे वह कोई निर्जीव काठ का मोहरा हो, असाधारण आत्मबल और त्याग-भावना का प्रमाण है। जब हम देखते हैं कि एक जर्जर काया वाला भिक्षुक भी मरने के नाम से काँपता है और यह इच्छा करता है कि किसी प्रकार अधिकाधिक दिनों तक साँस लेता रह सके, तब चौबीस वर्ष की मदमाती आयु में, दर्शनीय शरीर-सम्पत्ति रखते हुये, अपनी ही मृत्यु को इस तरह लापरवाही से ठुकराना किसी सच्चे आत्म-ज्ञानी के लिये ही सम्भव हो सकता है। बस यही सब से बड़ी शिक्षा है जिसे हमारे भाई भगतसिंह के चरित्र से ग्रहण कर सकते हैं। कहने को तो मुँह से एक साधारण बाजार में बैठने वाला भी जीवन को "असार" और "दो दिन का मेला" कहा करता है, पर व्यवहार में शरीर या सम्पति पर तनिक भी आँच आते ही ऐसी हाय-तोबा मचाई जाती है कि मानों वे युगों तक जीवित रहेंगे और सम्पत्ति को भी साथ में बाँधकर ले जायेंगे। एक तरफ "नास्तिक" कहे जाने वालों का ऐसा अद्भुत आत्म-त्याग और दूसरी तरफ दिन रात "ईश्वर की दुहाई" देने वालों की ऐसी स्वार्थ परता और भौतिकवादिता देख कर हमें यह कहने को विवश होना पड़ता है कि हमारा समस्त धर्म-कर्म और पूजा-पाठ दिखावटी है और हम झूठमूठ ही अध्यात्म की डींग हांका करते हैं। अगर हम सचमुच ईश्वर और आत्मा की सत्ता में विश्वास रखने वाले होते तो अपना जीवन अथवा सम्पत्ति, सेवा और परोपकार के कामों में लगाने में एक हर्ष का अनुभव

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org www.vicharkrantibooks.org

करते । हमारी यही अभिलाषा है कि चाहे हम सब भगतसिंह के समान निर्भीक और यमराज को चुनौती देने वाले न बन सकें, पर "सांसारिक माया मोह" में ऐसे लिप्त भी न हों कि समाज-सेवा और मातृभूमि के ऋण को चुकाने के उच्च आदर्श का यथाशक्ति पालन न कर सकें ।

हमारा कर्त्तव्य —

यद्यपि आज विदेशी शासन हट जाने से भगतसिंह के युग के समान अपने ही खून से होली खेलने की परिस्थिति बदल गई है, पर त्याग और तपस्या का जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता आज भी बनी हुई है । हम देख रहे हैं कि विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष में लोगों ने स्वार्थ त्याग और कष्ट सहन का जो परिचय दिया था आज उसकी प्रतिक्रिया हो रही है । उस समय देश सेवा और राजनीति में भाग लेने का अर्थ होता था कुछ देना अर्थात् देशहित के कार्यों में अपने शरीर, श्रम और सम्पत्ति का एक छोटा या बड़ा अंश उत्सर्ग करना । पर आज बिल्कुल उल्टी बात देखने में आ रही है कि "सार्वजानिक सेवा" अथवा राजनीति के कार्यों में भाग लेने का उद्देश्य है अपने स्वार्थ की पूर्ति करना या अधिकाधिक लाभ उठाना । यह स्थिति निश्चय ही बड़ी शोचनीय तथा घातक है । भगतसिंह के चरित्र से प्रेरणा ग्रहण करने या उसके पग चिन्हों का अनुसरण करने का नतीजा तो यही होना चाहिए कि "पुराने और नये क्रान्तिकारी" इस हीन मनोवृत्ति का डटकर मुकाबला करें और उसकी जड़ उखाड़ कर ही दम लें ।

वर्तमान समय में भ्रष्टाचार का बाजार जैसा गर्म हो रहा है और बड़े-बड़े "देश सेवक" भी जिस प्रकार दोनों हाथों से सम्पत्ति बटोरने में व्यस्त हैं, उसको चुपचाप देखते रहना या सहन करना सच्चे क्रान्तिकारी सिद्धान्त वालों के लिये लज्जा और कलंक की बात है । यद्यपि आज बम और पिस्तौल के उपयोग का जमाना नहीं रहा, पर भ्रष्टाचारियों को राजी या गैर राजी से निरस्त करना क्रांतिकारियों का कर्तव्य है । यदि भगतसिंह जैसे आत्म बलिदानियों के उदाहरण से यह प्रेरणा ली जा सके तो हम उपर्युक्त लक्ष्य को निश्चय ही प्राप्त कर सकेंगे ।

मुद्रक—कान्ता प्रिंटिंग प्रेस, जनरल गंज, मथुरा ।

Complete work of Yugrishi Pt. Sriram Sharma Acharya (Founder of AWGP Shantikunj, Haridwar) www.awgp.org
Free Download Life Chaning Books, Magazines, Articles, Stories, Great Personalities & Many More www.vicharkrantibooks.org

वर्गीक

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन-गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्व पूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयम् पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें सुनावें।

'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

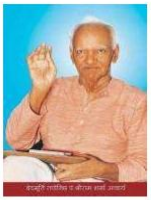

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org